Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Vol. 2, No. 6, July - August 2025

सिंगफो बोली के संदर्भ में देवनागरी की संभावनाएँ

जाइंङको सिंग्फो, अतिथि संकाय, हिन्दी,

रांग फ्राह शासकीय महाविद्यालय, चांगलांग, अरुणाचल प्रदेश ।

शोध सार:

अरुणाचल प्रदेश एक जनजातीय प्रदेश है और इसमें मुख्य रूप से 26 जनजातियाँ निवास करती हैं। 'सिंगफो' जनजाति यहाँ की एक प्रमुख जनजाति है जो चाङलाङ और नामसाई जिलों के साथ-साथ असम के तीनसुकिया जिले के मारघेरिता और शिवसागर जिले के सोनारी क्षेत्र में बसी हुई है। इसके अलावा सिंगफो बोलने वाले लोग जोरहाट, गोलाघाट और कारबी आङलोङ जिलों के कुछ क्षेत्रों में भी मिलते हैं।

भाषा मानव समाज के लिए ऐसा बहुमूल्य साधन हैं, जिसके माध्यम से प्रत्येक मनुष्य अपने मन के विचार विकारों को दूसरे के सम्मुख भली-भाँति अभिव्यक्त कर सकता है। इसी तरह लिपि के बिना भाषा की स्पष्ट अभिव्यक्ति संभव नहीं है। प्रत्येक भाषा को व्यक्त करने के लिए लिपि की आवश्यकता होती है। सिंगफो भाषा की अपनी कोई लिपि नहीं थी इसलिए सन् 1895 में डॉ. ओला हेनसन द्वारा विकसित रोमन लिपि को ही सिंगफो समुदाय के लोगों ने अपनाया। इस लिपि को केवल अरुणाचल प्रदेश के सिंगफो ही प्रयोग में लाते हैं ऐसा नहीं है बल्कि पूरे विश्व में म्यानमार, चीन, काचीन आदि सभी जगहों पर सिंगफो इसी रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं।

बीज शब्द: सिंगफो; अरुणाचल प्रदेश; भाषा; लिपि

प्रस्तावना

सिंगफो मूल रूप से म्यानमार के काचीन राज्य के निवासी हैं। अठारहवीं सदी में ये बर्मा (अभी म्यानमार) से भारत आए थे। आज भी 20 लाख से ज्यादा सिंगफो म्यानमार में हैं। 'सिंगफो ' शब्द असल में 'जिङ्फो' शब्द का, अंग्रेजों तथा अन्य बाहरी लोगों के गलत उच्चारण के कारण सिंगफो कहा जाने लगा। 'जिङ' शब्द का अर्थ है ' पूर्ण व्यवस्थित ' और 'फो' का अर्थ है ' उन्मुक्त' या 'आजाद'।

सिंगफो Lingua franca भाषा के अंतर्गत तिब्बत-बर्मी भाषा में आती है। तिब्बत-बर्मी भाषा वैज्ञानिक James Mati soft के अनुसार, "Singpho or Jingphaw which consists of a single language with only relatively slight differentiations among its dialects, is off paramount historical significance it seems to live at the linguistic (as well as geographical) cross roads of the entire Tibeto-Burman family showing special lexical and morphological affinities with all the other nuclei simultaneously."

सिंगफो भाषा की अपनी कोई लिपि नहीं है। वर्तमान में ये रोमन लिपि का प्रयोग कर रहे हैं जिसे सन 1895 में डॉ. ओला हेनसन, काचीन के बपटिस्ट मिशनरी ने विकसित किया था। डॉ. ओला हेनसन द्वारा विकसित रोमन लिपि में कुल 25 वर्ण हैं जो मुख्य रूप से उच्चारण के आधार हैं, जैसे –

I			L		T
इ			ला		ता
A	H	K	N	Y	Z
आ	हा	का	ना	या	जा
E			M		W
ई			मा		वा
E			E		
ए			ऐ		
O		C		G	S
ओ		सि		गा	सा

A	O	J	P	B	R	D
अ	उ	जा	पा	बा	रा	दा

सिंगफो भाषा में शब्द बहुत ही सीमित हैं। इसलिए एक ही शब्द के उच्चारण तान तथा वाक्य में प्रयोग होने के आधार पर अलग-अलग अर्थ निकलते हैं। जैसे-

1. वा - दाँत - teeth

	वा, S	-	वापस लौटना	-	back
	वा? (व्आ ?)	-	सूअर	-	pig
2.	शा	-	खाना	-	eat
	सा	-	जाना	-	to go
	सा ।	-	बेटा-बेटी	-	son-daughter
3.	लम	-	रास्ता	-	road
	लअम	-	हो गया	-	done
	लाअम	-	एकता	-	unity
4.	सि	-	मर जाना	-	die
	सी	-	सब्जी	-	vegetables
	नम सी	-	जंगली फल	-	wild fruits
5.	सत	-	भोजन	-	rice
	सअत	-	हत्या करना	-	murder

यद्वि सुनने और देखने में ये एक जैसे शब्द लगते हैं लेकिन तान तथा वाक्य में प्रयोग करने के आधार पर इनके अर्थ अलग-अलग हैं। इसी प्रकार सिंगफो भाषा में शब्द काफी सीमित होने के कारण संबंधों के लिए भी पर्याप्त शब्द नहीं है। जैसे कि –

1. 'नू दोय' शब्द चाची के लिए भी प्रयुक्त होता है साथ ही मौसी के लिए भी।
2. 'आमोय' शब्द बुआ के लिए भी प्रयुक्त होता है और सास के लिए भी प्रयुक्त होता है।
3. उसी प्रकार फूफा और ससुर के लिए 'आकू' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
4. इसी तरह 'आनिङ' भाभी के लिए भी प्रयुक्त होता है साथ ही ननद के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है।

इसलिए संबोधन करते समय स्वयं ही समझ लेना पडेगा कि किसके लिए क्या संबोधन करना है।

सिंगफो भाषा में देवनागरी लिपि की संभावनाएँ :- भाषा मानव समाज के लिए ऐसा बहुमूल्य साधन हैं, जिसके माध्यम से प्रत्येक मनुष्य अपने मन के विचार विकारों को दूसरे के सम्मुख भली-भाँति अभिव्यक्त कर सकता है। इसी तरह लिपि के बिना भाषा की स्पष्ट अभिव्यक्ति संभव नहीं है। प्रत्येक भाषा को व्यक्त करने के लिए लिपि की आवश्यकता होती है। सिंगफो भाषा की अपनी कोई लिपि नहीं थी इसलिए सन् 1895 में डॉ. ओला हेनसन द्वारा विकसित रोमन लिपि को ही सिंगफो समुदाय के लोगों ने अपनाया। इस लिपि को केवल अरुणाचल प्रदेश के सिंगफो ही प्रयोग में लाते हैं ऐसा नहीं है बल्कि पूरे विश्व में म्यानमार, चीन, काचीन आदि सभी जगहों पर सिंगफो इसी रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं।

देवनागरी लिपि के बारे में हम सभी जानते हैं कि ये लिपि वैज्ञानिक, व्यवस्थित है और साथ ही जैसा उच्चारण करते हैं वैसा ही लिखने की क्षमता इस लिपि में है। देवनागरी लिपि के समर्थन में अपने विचार प्रकट करते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भोपाल में 10वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में कहा, ''विनोबा जी द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलते हुए हिंदुस्तान की जितनी भाषाएँ है, वे भाषाएँ अपनी लिपि को तो बरकरार रखे, उसको समृद्ध करें। लेकिन नागरी लिपि में भी अपनी भाषा लिखने की आदत डालें, शायद विनोबा जी के यह विचार दादा धर्माधिकारी के विचार गांधीवादी मूल्यों से जुडे थे। यह अगर प्रभावी हुआ होता तो नागरी लिपि भी भारत की विविध भाषाओं को समझने के लिए और राष्ट्रीय-एकता के लिए एक बडी ताकत के रूप में उभर आई होती।''

नागरी लिपि को पूर्वोत्तर में प्रचलित करने के लिए कुछ बातों को ध्यान में रखना होगा। पहली बात यह कि जहाँ रोमन लिपि का प्रचलन है, वहाँ नागरी लिपि का प्रयोग कैसे हो ? दूसरी बात जिन जनजातियों की बोलियाँ अलिखित है उनमें नागरी लिपि का प्रयोग कैसे हो ?

जहाँ रोमन लिपि का प्रचलन है उस क्षेत्र में रोमन की न्यूनताओं और नागरी की सक्षमता को हर स्तर पर समझना होगा। लोगों को समझाना होगा कि तिब्बती, चीनी और जापानी भाषाएँ भी रोमन की अपेक्षा नागरी में बडे अच्छे प्रकार से उच्चारण के अनुरूप प्रयुक्त हो सकती है। सिंगफो भाषा भी मुख्य रूप से उच्चारण और तान पर निर्भर करती है। उपलब्ध रोमन लिपि के आधार पर सभी उच्चारण वर्ण देवनागरी लिपि में मौजूद है। सिंगफो रोमन लिपि के अंतर्गत 'ऐ' के उच्चरण के लिए दो वर्ण 'AI' का उपयोग किया जाता है जबकि 'देवनगारी में 'ऐ' केवल एक

वर्ण मौजूद है। उसी प्रकार 'ओ', 'औ', '' के उच्चारण के लिए भी दो वर्ण 'AU', 'AW' और 'NY' का उपयोग करते हैं।

सिंगफो रोमन लिपि के अंतर्गत कुछ उच्चारण वर्ण भ्रम भी पैदा करते हैं जैसे कि 'फ', 'थ', 'स', 'ह', ध्वनि के उच्चारण के लिए 'HP', 'TS', 'HK' लिखा जाता है जबकि 'फ' के लिए 'HP' नहीं होकर 'PH' लिखा होना चाहिए था। 'थ' के लिए 'HT' नहीं होकर 'TH' स: के लिए 'TS' न होकर 'S' और 'ह' के लिए 'H' होना चाहिए था।

सिंगफो में 'फूउम' (मोटा) शब्द लिखने के लिए 'Phum' लिखेंगे इसलिए पढने वाला व्यक्ति अगर सिंगफो नहीं जानता है तो वह गलत पढेगा साथ ही उच्चारण भी गलत करेगा। लेकिन वहीं अगर इसे देवनागरी में 'फूउम' लिखे तो सिंगफो नहीं जानने वाला व्यक्ति भी इसे सही पढ सकेगा और उच्चारण कर सकेगा । अरुणाचल की सभी जनजातिय भाषाओं में उच्चारण तथा तान की समस्याएँ आती है। कहीं तान ऊँची जाती हैं तो कहीं नीची। इसलिए पहले तान को समझकर फिर सही रूप में देवनागरी में लिखा जा सकता है।

निष्कर्ष

सिंगफो समुदाय के लोग काफी पुराने समय से सिंगफो रोमन लिपि का उपयोग कर रहे हैं। पूरे विश्व में जहाँ कहीं भी सिंगफो हैं सभी इसी लिपि का प्रयोग करते हैं और साथ ही एक दूसरे से सम्पर्क करते हैं। आज अरुणाचल प्रदेश के चाङलाङ जिले में जितने भी सिंगफो क्षेत्र हैं उन सभी स्कूलों में तीसरी भाषा के रूप में सिंगफो पढाई और लिखवायी जाती है। उनके लिए पाठ्यक्रम बनाए गए हैं। तथा परीक्षा भी ली जाती है। रोमन लिपि को छोडकर अचानक देवनागरी लिपि में परिवर्तित करना यह एक बडी चुनौती हो सकती है। देवनागरी लिपि में सिंगफो भाषा को अपेक्षाकृत सही-सही लिख सकते हैं लेकिन सही उच्चारण् और तान के लिए भाषा का जानना भी आवश्यक होगा।

अरुणाचल प्रदेश की बहुत सी भाषाएँ बोलियाँ आने वाले कुछ सालों में लुप्त होने के कगार पर हैं। इनमें सिंगफो भी एक है। इसका मुख्य कारण एक यह है कि इनकी जनसंख्या बहुत कम है। सिंगफो समाज की बहुमूल्य संस्कृति और परम्परा को बचाने के लिए एक व्यवस्थित भाषा का होना अति आवश्यक है। देवनागरी लिपि के माध्यम से सिंगफो लोग गीतों, लोक-कथाओं, लोकोक्तियों और मुहावरों का संकलन किया जा सकता है। भाषा केवल एक समुदाय, एक जनजाति और एक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए उसका क्षेत्र विस्तृत होना चाहिए और यह कार्य केवल देवनागरी लिपि ही कर सकती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. The Kachin : Lords of Burma's Northern Frontier' – By Bertil Lintner published in 1997, (P-7)
2. Shapwang Yawng Manau Poi 2006 Souvenir
3. N. Singpho- A study of Folk Narratives of the singphos of Arunanchal Pradesh .
4. नागरी संगम - अंक 142 – अप्रैल-जून 2014
5. नागरी संगम - अंक 148 – अक्टूबर-दिसंबर 2015